भारत सरकार
नागर विमानन मंत्रालय
लोक सभा
लिखित प्रश्न संख्या : 2347
गुरुवार, 13 मार्च, 2025/22 फाल्गुन, 1946 (शक) को दिया जाने वाला उत्तर

स्वदेशी विमान विनिर्माण का विकास

2347. श्रीमती पूनमबेन माडम:
श्री विष्णु दयाल राम:

क्या **नागर विमानन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने देश में स्वदेशी विमान विनिर्माण के विकास को बढ़ावा देने और सहायता देने के लिए कोई योजना बनाई है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या यह सच है कि स्वदेशी विमान विनिर्माण उद्योग को बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें स्थापित अंतर्राष्ट्रीय विमान उत्पादकों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में कठिनाई शामिल है; और

(ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और सरकार का ऐसी चुनौतियों का समाधान करने के लिए क्या उपाय करने का विचार है?

उत्तर
नागर विमानन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मुरलीधर मोहोल)

(क): सरकार, भारत में सार्वजनिक एवं निजी उद्यमों द्वारा क्षेत्रीय परिवहन विमानों सहित विमानों तथा संबद्ध उपकरणों के विनिर्माण के लिए पारिस्थितिकी तंत्र के विकास को प्रोत्साहित कर रही है। सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का उद्देश्य उद्योग के सामने आने वाली तकनीकी समस्याओं को दूर करना है। 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत वाणिज्यिक एयरो-विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2016 में वृहत राष्ट्रीय नागर विमानन नीति (एनसीएपी) को लागू किया गया था।

इसके अलावा, वर्ष 2024 में घरेलू विमान मरम्मत, कल-पुर्जा विनिर्माण और एमआरओ उद्योग को बढ़ावा देने के लिए, सरकार ने 5% आईजीएसटी की एक समान दर लागू की है, जो विमान के भागों, घटकों, परीक्षण उपकरणों, उपकरणों और टूल-किटों के आयात पर लागू होगी, चाहे उनके नामकरण वर्गीकरण की सामंजस्यपूर्ण प्रणाली (एचएसएन) कुछ भी हो, बशर्ते कि यह विनिर्दिष्ट शर्तों के अध्यधीन हो। इससे घरेलू एयरोस्पेस उद्योग और अधिक प्रतिस्पर्धी बन जाएगा।

(ख) और (ग): वैश्विक स्तर पर, एयरबस और बोइंग दो प्रमुख मूल उपकरण निर्माता (ओईएम) हैं जो वाणिज्यिक फिक्स्ड विंग विमान का निर्माण करते हैं जबकि अन्य ओईएम

क्षेत्रीय विमान का निर्माण करते हैं। भारत में सार्वजनिक और निजी उद्यमों द्वारा विमान और संबंधित उपकरणों के विकास और विनिर्माण को बढ़ावा देने और सुविधा प्रदान करने के सरकार के प्रयासों ने भारतीय एमएसएमई को एयरो विनिर्माण क्षेत्र में अपनी क्षमताओं का लाभ उठाने में सक्षम बनाया है, जिससे उद्योग में उनकी उपस्थिति का विस्तार हुआ है। बोइंग और एयरबस जैसी वैश्विक ओईएम कंपनियां मिलकर भारत में एमएसएमई से प्रतिवर्ष 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक के विमान कलपुर्जे खरीद रही हैं।

******